الجزء ١٤

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ٢

2	मुसलमान	काश वह होते	वह लोग जो काफ़िर हुए	आर्ज़ू करेंगे	बसा औक़ात

ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ

पस अनक़रीब	उम्मीद	और ग़फ़लत में रखे उन्हें	और फ़ाइदा उठा लें	वह खाएं	उन्हें छोड़ दो

يَعْلَمُوْنَ ٣ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ

एक लिखा हुआ	उस के लिए	मगर	बस्ती	किसी	हम ने हलाक किया	और नहीं	3	वह जान लेंगे

مَّعْلُوْمٌ ٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ٥

5	वह पीछे रहते हैं	और न	अपना मुक़र्ररा वक़्त	कोई उम्मत	न सबक़त करती है	4	मुक़र्ररा वक़्त

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ٦

6	दीवाना	बेशक तू	याद दिहानी (क़ुरआन)	उस पर	वह जो कि उतारा गया	ऐ वह	और वह बोले

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ٧ مَا نُنَزِّلُ

हम नाज़िल नहीं करते	7	सच्चा	से	तू है	अगर	फ़रिश्तों को	हमारे पास तू नहीं ले आता	क्यों

الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ٨ اِنَّا نَحْنُ

हम	बेशक	8	मोहलत दिए गए	उस वक़्त	और न होंगे	हक़ के साथ	मगर	फ़रिश्ते

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ٩ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ

से	और यक़ीनन हम ने भेजे	9	निगहबान	उस के	और बेशक हम	याद दिहानी (क़ुरआन)	हम ने नाज़िल किया

قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ١٠ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا

मगर	कोई रसूल	और नहीं आया उन के पास	10	पहले	गिरोह	में	तुम से पहले

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ١١ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ١٢

12	मुज्रिमों	दिल (जमा)	में	हम उसे डाल देते हैं	उसी तरह	11	इस्तिहज़ा करते	उस से	वह थे

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ١٣ وَلَوْ فَتَحْنَا

हम खोल दें	और अगर	13	पहले	रस्म - रविश	और पड़ चुकी है	उस पर	वह ईमान नहीं लाएंगे

عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ١٤ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

बान्ध दी गई	इस के सिवा नहीं	तो कहेंगे	14	चढ़ते	उस में	वह रहें	आस्मान	से	कोई दरवाज़ा	उन पर

ع ١٥ ١ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ١٥ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ

आस्मान	में	और यक़ीनन हम ने बनाए	15	सिह्र ज़दह	लोग	हम	बल्कि	हमारी आँखें

بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ١٦ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

शैतान	हर	से	और हम ने हिफ़ाज़त की उस की	16	देखने वालों के लिए	और उसे ज़ीनत दी	बुर्ज (जमा)

رَّجِيْمٍ ١٧ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ١٨

18	चमकता हुआ	शोला	तो उस का पीछा करता है	सुनना	चोरी करे	जो	मगर	17	मर्दूद

बाज़ औक़ात काफ़िर आर्ज़ू करेंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फ़ाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें ग़फ़लत में डाले रखे, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुक़र्रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुक़र्ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफ़िर) बोले ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन उतारा गया है बेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्चों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फ़रिश्ते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) बेशक हम ही ने क़ुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही उस के निगहबान हैं। (9) और यक़ीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिह्र ज़दह हैं। (15) और यक़ीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए और उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا

उस में	और हम ने उगाई	पहाड़	उस में (पर)	और हम ने रखे	हम ने उस को फैला दिया	और ज़मीन

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

और जो-जिस	सामाने मईशत	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	19	मौज़ूं	हर शै	से

لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا

और नहीं	उस के ख़ज़ाने	हमारे पास	मगर	कोई चीज़	और नहीं	20	रिज़्क़ देने वाले	उस के लिए	तुम नहीं

نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا

फिर हम ने उतारा	भरी हुई	हवाएं	और हम ने भेजी	21	मालूम - मुनासिब	अन्दाज़े से	मगर	हम उस को उतारते

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	ख़ज़ाने करने वाले	उस के	तुम	और नहीं	फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया	पानी	आस्मान	से

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं	23	वारिस (जमा)	और हम	और हम मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं	अलबत्ता हम	और बेशक हम

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِنَّ

और बेशक	24	पीछे रह जाने वाले	और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं	तुम में से	आगे गुज़रने वाले

رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ع وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٢ ع ١٠ ٢

और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया	25	इल्म वाला	हिक्मत वाला	बेशक वह	उन्हें जमा करेगा	वह	तेरा रब

الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾ ج وَالْجَآنَّ

और जिन (जमा)	26	सड़ा हुआ	सियाह गारे से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

तेरा रब	कहा	और जब	27	आग बे धुएं की	से	उस से पहले	हम ने उसे पैदा किया

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

28	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान	बनाने वाला	बेशक मैं	फ़रिश्तों को

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	सिजदा करते हुए	उस के लिए	तो गिर पड़ो	अपनी रूह से	उस में	और फूंकूं	मैं उसे दुरुस्त कर लूँ	फिर जब

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ

साथ	वह हो	उस ने इन्कार किया कि	इब्लीस	सिवाए	30	सब के सब	वह सब	फ़रिश्ते	पस सिजदा किया

السّٰجِدِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	32	सिजदा करने वाले	साथ	कि तू न हुआ	तुझे क्या हुआ	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	31	सिजदा करने वाले

لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾

33	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	तू ने उस को पैदा किया	इन्सान को	कि सिजदा करूँ	मैं नहीं हूँ

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई। (19) और हम ने तुम्हारे लिए इस में रोज़ी रोटी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क़ देने वाले नहीं। (20) और कोई चीज़ नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21) और हम ने हवाएं भेजीं (पानी से) भरी हुईं, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के ख़ज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22) और बेशक हम (ही) ज़िन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23) और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं तुम में से आगे गुज़र जाने वाले, और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं पीछे रह जाने वाले। (24) और बेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा करेगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25) और तहक़ीक़ हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनकनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26) और जिनों को उस से पहले हम ने बे धुएं की आग से पैदा किया। (27) और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा बेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के लिए सिजदे में गिर पड़ो। (29) पस सिजदा किया सब के सब फ़रिश्तों ने, (30) इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिजदा करने वालों के साथ हो। (31) अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ? कि तू सिजदा करने वालों के साथ न हुआ। (32) उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिजदा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ

तुझ पर	और बेशक	34	मर्दूद	बेशक तू	यहां से	पस निकल जा	उस ने कहा

اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ

तक	मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	35	रोज़े इन्साफ़	तक	लानत

يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ

वक़्त	दिन	तक	37	मोहलत दिए जाने वाले	से	बेशक तू	उस ने कहा	36	जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे

الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा	तू ने मुझे गुमराह किया	जैसा कि	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	38	मालूम (मुक़र्रर)

فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ

उन में से	तेरे बन्दे	सिवाए	39	सब	और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको	ज़मीन में

الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ

बेशक	41	सीधा	मुझ तक	रास्ता	यह	उस ने फ़रमाया	40	मुख़लिस (जमा)

عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ

तेरी पैरवी की	जो - जिस	मगर	कोई ज़ोर	उन पर	तेरे लिए (तेरा)	नहीं	मेरे बन्दे

مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

43	सब	उन के लिए वादा गाह	जहन्नम	और बेशक	42	बहके हुए (गुमराह)	से

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ ع ٢ ١٩ ٣

44	तक़सीम शुदह	एक हिस्सा	उन से	हर दरवाज़े के लिए	दरवाज़े	सात	उस के लिए

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ

सलामती के साथ	तुम उन में दाख़िल हो जाओ	45	और चश्मे	बाग़ात	में	परहेज़गार	बेशक

آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ

पर	भाई भाई	कीना	से	उन के सीने	में	जो	और हम ने खींच लिया	46	बेख़ौफ़ ओ ख़तर

سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا

उस से	वह	और न	कोई तक्लीफ़	उस में	उन्हें न छुएगी	47	आमने सामने	तख़्त (जमा)

بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ

और यह कि	49	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	मैं	कि बेशक	मेरे बन्दों	ख़बर दे दो	48	निकाले जाएंगे

عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾ وقف لازم

51	इब्राहीम (अ)	मेहमान	से - का	और उन्हें ख़बर दो (सुना दो)	50	दर्दनाक	अ़ज़ाब	वह (ही)	मेरा अ़ज़ाब

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

52	डरने वाले (डरते हैं)	तुम से	हम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्हों ने कहा	उस पर (पास)	वह दाख़िल हुए (आए)	जब

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्नत) से निकल जा बेशक तू मर्दूद है। (34)
और बेशक तुझ पर रोज़े इन्साफ़ (क़ियामत) तक लानत है। (35)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगें। (36)
उस ने फ़रमाया बेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37)
उस दिन तक जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (38)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39)
सिवाए उन में से जो तेरे मुख़लिस बन्दे हैं। (40)
उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41)
बेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42)
और बेशक उन सब के लिए जहन्नम वादागाह है। (43)
उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44)
बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (होंगे)। (45)
तुम उन में सलामती के साथ बेख़ौफ़ ओ ख़तर दाख़िल हो जाओ। (46)
और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47)
उस में उन्हें कोई तक्लीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48)
मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (49)
और यह कि मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है। (50)
और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

उन्हों ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की खुशख़बरी देते हैं इल्म वाले की। (53)
उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में खुशख़बरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की खुशख़बरी देते हो? (54)
वह बोले हम ने तुम्हें खुशख़बरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55)
उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56)
उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57)
वह बोले बेशक हम भेजे गए हैं मुज्रिमों की एक क़ौम की तरफ़, (58)
सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे, (59)
सिवाए उस की औ़रत के, हम ने फ़ैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60)
पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61)
उस ने कहा बेशक तुम नाआशना लोग हो। (62)
वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अ़ज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63)
और हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए हैं और बेशक हम सच्चे हैं। (64)
पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले निकलें और खुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है। (65)
और हम ने उस की तरफ़ उस बात का फ़ैसला भेज दिया कि सुब्ह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66)
और शहर वाले खुशियां मनाते आए। (67)
उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68)
और अल्लाह से डरो और मुझे ख़्वार न करो। (69)
वह बोले क्या हम ने तुझे सारे जहान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70)
उस ने कहा यह मेरी बेटियां हैं (इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71)
(ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की क़सम यह लोग बेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ

उन्हों ने कहा	डरो नहीं	बेशक हम तुम्हें खुशख़बरी देते हैं	एक लड़का	इल्म वाला	53	उस ने कहा	क्या तुम मुझे खुशख़बरी देते हो

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

पर - में	कि	मुझे पहुँच गया	बुढ़ापा	सो किस बात	तुम खुशख़बरी देते हो	54	वह बोले	हम ने तुम्हें खुशख़बरी दी

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ

सच्चाई के साथ	आप न हों	से	मायूस होने वाले	55	उस ने कहा	और कौन	मायूस होगा	से

رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا

रहमत	अपना रब	सिवाए	गुमराह (जमा)	56	उस ने कहा	पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम)	ऐ

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ

भेजे हुए (फ़रिश्तो)	57	वह बोले	हम बेशक	भेजे गए	तरफ़	एक क़ौम	मुज्रिम (जमा)	58	सिवाए

اٰلَ لُوْطٍ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ اِنَّهَا لَمِنَ

घर वाले लूत के	हम	अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे	सब	59	सिवाए	उस की औ़रत	हम ने फ़ैसला कर लिया है	बेशक वह	से

الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ ع ١٦

पीछे रह जाने वाले	60	पस जब	आए	लूत (अ) के घर वाले	भेजे हुए (फ़रिश्ते)	61	उस ने कहा	बेशक तुम	लोग

مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

ऊपरे (ना आशना)	62	वह बोले	बल्कि	हम आए हैं तुम्हारे पास	उस के साथ जो	वह थे	उस में	शक करते	63

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ

और हम तुम्हारे पास आए हैं	हक़ के साथ	और बेशक हम	अलबत्ता सच्चे	64	पस ले निकलें आप	अपने घर वालों को	एक हिस्सा	से

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا

रात	और खुद चलें	उन के पीछे	और न	पीछे मुड़ कर देखे	तुम में से	कोई	और चले जाओ

حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ

जैसे	तुम्हें हुक्म दिया गया	65	और हम ने फ़ैसला भेजा	उस की तरफ़	उस	बात	कि	जड़	यह लोग

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

कटी हुई	सुब्ह होते	66	और आए	शहर वाले	खुशियां मनाते	67

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾

उस ने कहा	कि	यह लोग	मेरे मेहमान	पस मुझे रुस्वा न करो तुम	68	और डरो	अल्लाह	और मुझे ख़्वार न करो	69

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ

वह बोले	क्या नहीं	हम ने तुझे मना किया	से	सारे जहान	70	उस ने कहा	यह	मेरी बेटियां	अगर

كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

तुम हो	करने वाले (करना है)	71	तुम्हारी जान की क़सम	बेशक वह	अलबत्ता में	अपने नशे	मदहोश थे	72

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

उस के नीचे का हिस्सा	उस के ऊपर का हिस्सा	पस हम ने उसे कर दिया	73	सूरज निकलते वक़्त	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस	में	बेशक	74	संगे गिल (खिंगर)	से	पत्थर	उन पर	और हम ने बरसाए

لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

निशानी	उस	में	बेशक	76	सीधा	रास्ते पर	और बेशक वह	75	ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا

हम ने बदला लिया	78	ज़ालिम (जमा)	एयका (बन) वाले (क़ौमे शुऐब)	थे	और तहक़ीक़	77	ईमान वालों के लिए

مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ

हिज्र वाले	और अलबत्ता झुटलाया	79	खुले	रास्ते पर	और बेशक वह दोनों	उन से

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾

81	मुँह फेरने वाले	उस से	पस वह थे	अपनी निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	80	रसूल (जमा)

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

82	बेख़ौफ़ ओ ख़तर	घर	पहाड़ (जमा)	से	और वह तराशते थे

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا

जो	उन के	तो न काम आया	83	सुबह होते	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا

और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया हम ने	और नहीं	84	वह कमाया करते थे

بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ

दरगुज़र करना	पस दरगुज़र करो	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	और बेशक	हक़ के साथ	मगर	उन के दरमियान

الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ

हम ने तुम्हें दीं	और तहक़ीक़	86	जानने वाला	पैदा करने वाला	वह	तुम्हारा रब	बेशक	85	अच्छा

سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ

हरगिज़ न बढ़ाएं आप	87	अज़मत वाला	और क़ुरआन	बार बार दोहराई जाने वाली	से	सात

عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ

और न ग़म खाएं	उन के	कई जोड़े	उस को	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें

عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا

मैं	बेशक मैं	और कह दें	88	मोमिनों के लिए	अपने बाज़ू	और झुका दें	उन पर

النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

90	तक़सीम करने वाले	पर	हम ने नाज़िल किया	जैसे	89	डराने वाला अलानिया

وقف لازم ع ١٩ ٥

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने आ लिया। (73) पस हम ने उस (बस्ती) का ऊपर का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा) कर दिया, और हम ने उन पर खिंगर के पत्थर बरसाए। (74) बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (75) और बेशक वह (बस्ती) सीधे रास्ते पर (वाक़े) है। (76) बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (77) और तहक़ीक़ क़ौमे शुऐब (अ) के लोग ज़ालिम थे। (78) और हम ने उन से बदला लिया, और वह दोनों (बस्तियां वाक़े हैं) एक खुले रास्ते पर। (79) और अलबत्ता "हिज्र" के रहने वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80) और हम ने उन्हें अपनी निशानियां दीं पस वह उन से मुँह फेरने वाले थे। (81) और वह पहाड़ों से बेख़ौफ़ ओ ख़तर घर तराशते थे। (82) पस उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया। (83) तो जो वह कमाया करते थे (उन का क्या धरा) उन के काम न आया। (84) और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत) के साथ, और बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है पस अच्छी तरह माफ़ करो। (85) बेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, जानने वाला है। (86) और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें (सूरह-ए-फ़ातिहा की) बार बार दोहराई जाने वाली सात (आयात) दीं और अज़मत वाला क़ुरआन। (87) आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें) (उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को दीं, और उन पर ग़म न खाएं, और आप (स) अपने बाज़ू झुका दें मोमिनों के लिए। (88) और कह दें बेशक मैं अलानिया डराने वाला हूँ। (89) जैसे हम ने तक़सीम करने वालों (तफ़्रिक़ा परदाज़ों) पर अज़ाब नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91) सो तेरे रब की क़सम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92) उस की बाबत जो वह करते थे। (93) पस जिस बात का आप (स) को हुक्म दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज़ करें (मुँह फेर लें)। (94) बेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के ख़िलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफ़ी हैं। (95) जो लोग अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह अनक़रीब जान लेंगे। (96) और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97) तो तस्बीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हम्द के साथ, और सिज्दा करने वालों में से हों, (98) और अपने रब की इबादत करते रहें यहां तक कि आप (स) के पास यक़ीनी बात (मौत) आ जाए। (99)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

आपहुँचा अल्लाह का हुक्म सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1) वह फ़रिश्ते अपने हुक्म से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2) उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3) उस ने इन्सान को पैदा किया नुत्फ़े से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4) और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (5) और तुम्हारे लिए उन में ख़ूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुबह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ

हम ज़रूर पूछेंगे उन से	सो तेरे रब की क़सम	91	टुकड़े टुकड़े	क़ुरआन	उन्हों ने कर दिया	वह लोग जो

اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ — الربع

तुम्हें हुक्म दिया गया	जिस का	पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स)	93	वह करते थे	उस की बाबत जो	92	सब

وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ

जो लोग	95	मज़ाक़ उड़ाने वाले	काफ़ी हैं तुम्हारे लिए	बेशक हम	94	मुश्रिक (जमा)	से	और एराज़ करें

يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ

हम जानते हैं	और अलबत्ता	96	वह जान लेंगे	पस अनक़रीब	कोई दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	बनाते हैं

اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ

और हो	अपना रब	हम्द के साथ	तो तस्बीह करें	97	जो वह कहते हैं	उस से	तुम्हारा सीना (दिल)	तंग होता है	बेशक तुम

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع ٦ ٦

99	यक़ीनी बात	आए आप (स) के पास	यहां तक कि	अपना रब	और इबादत करें	98	सिज्दा करने वाले	से

اٰيَاتُهَا ١٢٨ ❀ سُوْرَةُ النَّحْلِ (١٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकूआत 16 — (16) सूरतुन नहल — शहद की मक्खी — आयात 128

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	सो उस की जल्दी न करो	आ पहुँचा अल्लाह का हुक्म

يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

जिसे चाहता है	पर	अपने हुक्म	से	वहि के साथ	फ़रिश्ते	वह नाज़िल करता है	1	वह शरीक बनाते हैं

مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾ خَلَقَ

उस ने पैदा किए	2	पस मुझ से डरो	मेरे	सिवाए	कोई माबूद	नहीं	कि वह	तुम डराओ	कि	अपने बन्दे	से

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ

पैदा किया उस ने	3	वह शरीक करते हैं	उस से जो	बरतर	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾ وَالْاَنْعَامَ

और चौपाए	4	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	नुत्फ़ा	से	इन्सान

خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٥﴾

5	तुम खाते हो	उन में से	और फ़ाइदे (जमा)	गर्म सामान	उन में	तुम्हारे लिए	उस ने उन को पैदा किए

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿٦﴾

6	सुबह को चराने ले जाते हो	और जिस वक़्त	शाम को चरा कर लाते हो	जिस वक़्त	ख़ूबसूरती-शान	उन में	और तुम्हारे लिए

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ

हलकान कर के	बग़ैर	उन तक पहुँचने वाले	न थे तुम	शहर (जमा)	तरफ़	तुम्हारे बोझ	और वह उठाते हैं

الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۷﴾ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ

और ख़च्चर	और घोड़े	7	रहम करने वाला	इन्तिहाई शफ़ीक़	तुम्हारा रब	बेशक	जानें

وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾

8	तुम नहीं जानते	जो	और वह पैदा करता है	और ज़ीनत	ताकि तुम उन पर सवार हो	और गधे

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ

तो वह तुम्हें हिदायत देता	और अगर वह चाहे	टेढ़ी	और उस से	राह	सीधी	और अल्लाह पर

ع ۹ / ۷ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ

उस से	तुम्हारे लिए	पानी	आस्मान	से	नाज़िल किया (बरसाया)	जिस ने	वही	9	सब

شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿۱۰﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

उस से	तुम्हारे लिए	वह उगाता है	10	तुम चराते हो	उस में	दरख़्त	और उस से	पीना

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ

हर	और से - के	और अंगूर	और खजूर	और ज़ैतून	खेती

الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَسَخَّرَ

और मुसख़्ख़र किया	11	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	फल (जमा)

لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ

और सितारे	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	तुम्हारे लिए

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

12	वह अक़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	उस के हुक्म से	मुसख़्ख़र

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ

बेशक	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	ज़मीन में	तुम्हारे लिए	पैदा किया	और जो

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

जो - जिस	और वही	13	वह सोचते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में

سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا

और तुम निकालो	ताज़ा	गोश्त	उस से	ताकि तुम खाओ	दर्या	मुसख़्ख़र किया

مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ

पानी चीरने वाली	कश्ती	और तुम देखते हो	तुम वह पहनते हो	ज़ेवर	उस से

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

14	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल	से	और ताकि तलाश करो	उस में

और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक ले जाते हैं जहां जानें हलकान किए बग़ैर तुम पहुँचने वाले न थे। बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत रहम वाला है। (7)

और घोड़े और ख़च्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराब होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और ज़ैतून, और खजूर, और अंगूर और हर क़िस्म के फल, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़्ख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक्म से, बेशक उस में अ़क़्ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कीं मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग ब रंग की, बेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोश्त खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कश्तियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए) ताकि तुम राह पाओ। (15)
और अ़लामतें (बनाईं) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। (16)
क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (17)
और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (18)
और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (19)
और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह ख़ुद पैदा किए गए हैं। (20)
मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। (21)
तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आख़िरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मग़रूर हैं। (22)
यक़ीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। (23)
और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। (24)
अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, ख़ूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। (25)
जो उन से पहले थे उन्हों ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अ़ज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। (26)

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا
और डाले (रखे) | ज़मीन में - पर | पहाड़ | कि झुक न पड़े | तुम्हें ले कर | और नहरें - दर्या | और रास्ते

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ
ताकि तुम | राह पाओ | 15 | और अ़लामतें | और सितारा | वह | रास्ता पाते हैं | 16 | क्या - पस जो

يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
पैदा करे | उस जैसा जो | पैदा नहीं करता | क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते | 17 | और अगर | तुम शुमार करो | अल्लाह की नेमत

لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ
उस को पूरा न गिन सकोगे | बेशक अल्लाह | अलबत्ता बख़्शने वाला | निहायत मेहरबान | 18 | और अल्लाह | जानता है | जो तुम छुपाते हो

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ
और जो | तुम ज़ाहिर करते हो | 19 | और जिन्हें | वह पुकारते हैं | सिवाए | अल्लाह | वह पैदा नहीं करते

شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ؕ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ
कुछ भी | और वह (ख़ुद) | पैदा किए गए | 20 | मुर्दे | नहीं | ज़िन्दा | और वह नहीं जानते

ع ١٢/٢ ٨ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
कब | वह उठाए जाएंगे | 21 | तुम्हारा माबूद | माबूद | एक (यकता) | पस जो लोग | ईमान नहीं रखते

بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ
आख़िरत पर | उन के दिल | मुन्किर (इन्कार करने वाले) | और वह | तकब्बुर करने वाले (मग़रूर) | 22 | यक़ीनी बात | कि

اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾
अल्लाह | जानता है | जो | वह छुपाते हैं | और जो | वह ज़ाहिर करते हैं | बेशक वह | पसन्द नहीं करता | तकब्बुर करने वाले | 23

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ
और जब | कहा जाए | उन से | क्या | नाज़िल किया | तुम्हारा रब | वह कहते हैं | कहानियां

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ
पहले लोग | 24 | अन्जामे कार वह उठाएंगे | अपने बोझ (गुनाह) | पूरे | क़ियामत के दिन

وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ
और कुछ | बोझ | उन के जिन्हें | वह गुमराह करते हैं | इल्म के बग़ैर | ख़ूब सुन लो | बुरा

ع ٣ ٩ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى
जो वह लादते हैं | 25 | तहक़ीक़ मक्कारी की | वह लोग जो | उन से पहले | पस आया

اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ
अल्लाह | उन की इमारत | से | बुन्याद (जमा) | पस गिर पड़ी | उन पर | छत | से

فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
उन के ऊपर | और आया उन पर | अ़ज़ाब | से | जहां से | उन्हें ख़याल न था | 26

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

वह जो कि	मेरे शरीक	कहां	और कहेगा	वह उन्हें रुस्वा करेगा	क़ियामत के दिन	फिर

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ

रुस्वाई	बेशक	इल्म (इल्म वाले)	दिए गए	वह लोग जो	कहेंगे	उन (के बारे) में	झगड़ते	तुम थे

الْيَوْمَ وَالسُّوْۗءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿٢٧﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ

फ़रिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	27	काफ़िर (जमा)	पर	और बुराई	आज

ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ بَلٰٓى اِنَّ

बेशक	हां हां	कोई बुराई	हम न करते थे	पैग़ामे इताअ़त	पस डालेंगे	अपने ऊपर	ज़ुल्म करते हुए

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	दरवाज़े	सो तुम दाख़िल हो	28	तुम करते थे	वह जो	जानने वाला	अल्लाह

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

उन लोगों से जिन्हों ने परहेज़गारी की	और कहा गया	29	तकब्बुर करने वाले	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	उस में	हमेशा रहोगे

مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوْا خَيْرًا ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ

में	भलाई की	उन के लिए जो लोग	बहतरीन	वह बोले	तुम्हारा रब	उतारा	क्या

هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ۭ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿٣٠﴾

30	परहेज़गारों का घर	और क्या खूब	बेहतर	और आख़िरत का घर	भलाई	दुनिया	इस

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا

वहां	उन के लिए	नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	वह उन में दाख़िल होंगे	हमेशगी	बाग़ात

مَا يَشَآءُوْنَ ۭ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ

उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	31	परहेज़गार (जमा)	अल्लाह	जज़ा देता है	ऐसी ही	जो वह चाहेंगे

الْمَلٰۗىِٕكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا

उस के बदले जो	जन्नत	तुम दाख़िल हो	सलामती तुम पर	वह कहते हैं	पाक होते हैं	फ़रिश्ते

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ اَوْ يَاْتِيَ

या आए	फ़रिश्ते	उन के पास आएं	यह कि	मगर (सिर्फ़)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	32	तुम करते थे (आमाल)

اَمْرُ رَبِّكَ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ

और नहीं ज़ुल्म किया उन पर	उन से पहले	वह लोग जो	किया	ऐसा ही	तेरा रब	हुक्म

اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	पस उन्हें पहुँचीं	33	ज़ुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और बल्कि	अल्लाह

ع ٤ ٩ ١٠ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लिया	जो उन्हों ने किया (आमाल)

फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंग बेशक आज के दिन रुस्वाई और बुराई है काफ़िरों पर। (27)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, फिर वह इताअ़त का पैग़ाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (28)

सो तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (29)

और परहेज़गारों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आख़िरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या खूब है! परहेज़गारों का घर। (30)

हमेशगी के बाग़ात, जिन में वह दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है। (31)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)

अपने आमाल के बदले जन्नत में दाख़िल हो। क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएं, या तेरे रब का हुक्म आए, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (खुद) ज़ुल्म करते थे। (33)

पस उन्हें पहुँचीं उन के आमाल की बुराइयां, और उन्हें घेर लिया उस (अ़ज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (34)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवाए	हम परस्तिश करते	न	चाहता अल्लाह	अगर	उन्हों ने शिर्क किया	वह लोग जो	और कहा

مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ

कोई शै	उस के (हुक्म के) सिवा	और न हराम ठहराते हम	हमारे बाप दादा	और न	हम	कोई - किसी शै

كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا

मगर	रसूल (जमा)	पर (ज़िम्मे)	पस क्या है	उन से पहले	वह लोग जो	किया	उसी तरह

الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ

कि	रसूल	हर उम्मत	में	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	35	साफ़ साफ़	पहुँचा देना

اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ

अल्लाह	जिसे हिदायत दी	सो उन में से बाज़	तागूत (सरकश)	और बचो	अल्लाह	इबादत करो तुम

وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا

फिर देखो	ज़मीन में	पस चलो फिरो	गुमराही	उस पर	साबित हो गई	बाज़	और उन में से

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ

उन की हिदायत के लिए	तुम हिर्स करो (ललचाओ)	अगर	36	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	वह गुमराह करता है	जिसे	हिदायत नहीं देता	तो बेशक अल्लाह

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ

जो मर जाता है	अल्लाह	नहीं उठाएगा	अपनी क़सम	अपनी सख़्त	अल्लाह की	और उन्हों ने क़सम खाई

بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ ۙ

38	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	सच्चा	उस पर	वादा	क्यों नहीं

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और ताकि जान लें	उस में	इख़्तिलाफ़ करते हैं	जो	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे

اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ

कि हम कहते हैं	जब हम उस का इरादा करें	किसी चीज़ को	हमारा फ़रमाना	उस के सिवा नहीं	39	झूटे थे	कि वह

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

ع ٥ ١١ ٦

उस के बाद	अल्लाह के लिए	उन्हों ने हिज्रत कि	और वह लोग जो	40	तो वह हो जाता है	हो जा	उस को

مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ

وقف لازم

काश	बहुत बड़ा	आख़िरत	और बेशक अजर	अच्छी	दुनिया में	ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे	कि उन पर ज़ुल्म किया गया

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	भरोसा करते हैं	और अपने रब पर	उन्हों ने सब्र किया	वह लोग जो	41	वह जानते

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परस्तिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)

और तहक़ीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झूटलाने वालों का? (36)

अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)

और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) क़सम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े क़ियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)

ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)

जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि "हो जा" तो वह हो जाता है। (40)

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिज्रत कि उस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और बेशक आख़िरत का अजर बहुत बड़ा है, काश वह (हिज्रत से रह जाने वाले) जानते। (41)

जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (42)

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ

याद रखने वाले	पस पूछो	उन की तरफ़	हम वहि करते हैं	मर्दों के सिवा	तुम से पहले	हम ने भेजे	और नहीं

اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल की	और किताबें	निशानियों के साथ	43	नहीं जानते	तुम हो	अगर

الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

44	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें	और ताकि वह	उन की तरफ़	जो नाज़िल किया गया	लोगों के लिए	ताकि वाज़ेह कर दो	याददाशत (किताब)

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ

ज़मीन	उन को	अल्लाह	धंसादे	कि	बुरे	दाओ किए	जिन लोगों ने	क्या बेख़ौफ़ हो गए हैं

اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ

उन्हें पकड़ ले	या	45	वह ख़बर नहीं रखते	उस जगह से	अज़ाब	उन पर आए	या

فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰي تَخَوُّفٍ ۭ فَاِنَّ

पस बेशक	डराना	पर (बाद)	उन्हें पकड़ ले	या	46	आजिज़ करने वाले	वह	पस नहीं	उन को चलते फिरते	में

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ

जो चीज़	अल्लाह	जो पैदा किया	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा	47	निहायत रहम करने वाला	इन्तिहाई शफ़ीक़	तुम्हारा रब

يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَاۗىِٕلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ

और वह	अल्लाह के लिए	सिजदा करते हुए	और बाएं	दाएं	से	उस के साए	ढलते हैं

دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ

से	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	और अल्लाह के लिए सिजदा करता है	48	आजिज़ी करने वाले

دَاۗبَّةٍ وَّالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ

उन के ऊपर	से	अपना रब	वह डरते हैं	49	तकब्बुर नहीं करते	और वह	और फ़रिश्ते	जानदार

ع ١٢ السجدة ٣ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ

दो	दो माबूद	तुम बनाओ	न	अल्लाह	और कहा	50	उन्हें हुक्म दिया जाता है	जो	और वह (वही) करते हैं

اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो	और उसी के लिए	51	तुम मुझ से डरो	पस मुझ ही से	यकता	माबूद	वह	इस के सिवा नहीं

وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُمْ

तुम्हारे पास	और जो	52	तुम डरते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा	लाज़िम	इताअ़त ओ इबादत	और उसी के लिए	और ज़मीन

مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْــَٔــرُوْنَ ﴿٥٣﴾

53	तुम रोते (चिल्लाते) हो	तो उस की तरफ़	तक्लीफ़	तुम्हें पहुँचती है	जब	फिर	अल्लाह की तरफ़ से	कोई नेमत

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

54	वह शरीक करता है	अपने रब के साथ	तुम में से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक़	तुम से	सख़्ती	खोलदे (दूर कर देता है)	जब	फिर

النصف

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भेजे, हम वहि करते हैं उन की तरफ़, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43) निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (44) जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अ़ज़ाब आजाए जहां से उन को ख़बर ही न हो, (45) या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46) या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़ निहायत रहम तरने वाला है। (47) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते हैं, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिजदा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले हैं। (48) और अल्लाह को सिजदा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से ज़मीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकब्बुर नहीं करते। (49) वह अपने रब से डरते हैं (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (50) और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51) और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताअ़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ़ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचती है तो उसी की तरफ़ तुम रोते चिल्लाते हो। (53) फिर वह जब तुम से सख़्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक़ उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

ताकि वह उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठालो, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (55) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मक़र्रर करते हैं, जिन (माबूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की क़सम तुम से उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56) और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57) और जब उन में से किसी को लड़की की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उस का चहरा सियाह पड़ जाता है और वह ग़ुस्से से भर जाता है। (58) लोगों से छुपता फिरता है उस "बुराई" की ख़ुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़न कर दे, याद रखो! बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (59) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (60) और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के ज़ुल्म के सब्ब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दते मुक़र्ररा तक, फिर जब उन का वक़्त आगया, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61) और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62) अल्लाह की क़सम! तहक़ीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अ़मल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (63) और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُوْنَ

और वह मुक़र्रर करते हैं	55	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	तो तुम फ़ाइदा उठा लो	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	ताकि वह नाशुक्री करें

لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا

उस से जो	तुम से ज़रूर पुछा जाएगा	अल्लाह की क़सम	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	हिस्सा	वह नहीं जानते	उस के लिए जो

كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	उन का दिल चाहता है	जो	और अपने लिए	वह पाक है	बेटियां	और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए	56	तुम झूट बान्धते थे

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾ ع

58	ग़ुस्से से भर जाता है	और वह	सियाह	उस का चेहरा	हो जाता (पड़ जाता है)	लड़की की	उन में से किसी को	ख़ुशख़बरी दी जाए	और जब

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْۗءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ

या	रुस्वाई के साथ	या उस को रखे	ख़ुशख़बरी दी गई जिस की	जो	बुराई	से - सबब	क़ौम (लोग)	से	छुपता फिरता है

يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	59	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	याद रखो	मिट्टी में	दबादे (दफ़न करदे)

بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ ع ع ١٠ ١٣

60	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	शान बुलन्द	और अल्लाह के लिए	बुरा	हाल	आख़िरत पर

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	चलने वाला	कोई	उस (ज़मीन) पर	न छोड़े वह	उन के ज़ुल्म के सब्व	लोग	अल्लाह	गिरिफ़्त करे	और अगर

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ

न पीछे हटेंगे	उन का वक़्त	आगया	फिर जब	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	तक	वह ढील देता है उन्हें

سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ

और बयान करती हैं	वह अपने लिए नापसन्द करते हैं	जो	अल्लाह के लिए	और वह बनाते (ठहराते) हैं	61	और न आगे बढ़ेंगे	एक घड़ी

اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ

जहन्नम	उन के लिए	कि	लाज़िमी बात	भलाई	उन के लिए	कि	झूट	उन की ज़बानें

وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	तहक़ीक़ हम ने भेजे	अल्लाह की क़सम	62	आगे भेजे जाएंगे	और बेशक वह

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ

और उन के लिए	आज	उन का रफ़ीक़	पस वह	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	फिर अच्छा कर दिखाया

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي

जो - जिस	उन के लिए	इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो	मगर	किताब	तुम पर	उतारी हम ने	और नहीं	63	दर्दनाक अ़ज़ाब

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

64	वह ईमान लाए हैं	उन लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ

में	बेशक	उस की मौत	बाद	ज़मीन	उस से	फिर जिन्दा किया	पानी	आस्मान	से	उतारा	और अल्लाह

ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ ع ٨ ١٤

हम पिलाते हैं तुम को	अलबत्ता इब्रत	चौपाए	में	तुम्हारे लिए	और बेशक	65	वह सुनते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस

مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	पीने वालों के लिए	खुशगवार	ख़ालिस	दूध	और खून	गोबर	दरमियान	से	उन के पेट (जमा)	में	उस से जो

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا

और रिज़्क़	शराब	उस से	तुम बनाते हो	और अंगूर	खजूर	फल (जमा)	और से

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى

तरफ़-को	तुम्हारा रब	और इल्हाम किया	67	अक़्ल रखते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस	में	बेशक	अच्छा

النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	छतरियां बनाते हैं	और उस से जो	दरख़्त	और से-में	घर (जमा)	पहाड़ (जमा)	से-में	तू बनाले	कि	शहद की मक्खी

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ

से	निकलती है	नर्म ओ हमवार	अपना रब	रस्ते	फिर चल	हर क़िस्म के फल	से-के	खा	फिर

بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

इस	में	बेशक	लोगों के लिए	शिफ़ा	उस में	उस के रंग	मुख़तलिफ़	पीने की एक चीज़	उन के पेट (जमा)

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ؕ وَمِنْكُمْ مَّنْ

जो	और तुम में से बाज़	वह मौत देता है तुम्हें	फिर	पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	69	सोचते हैं	लोगों के लिए	निशानियां

يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ

जानने वाला	बेशक अल्लाह	कुछ	इल्म	बाद	वह वे इल्म हो जाए	ताकि	नाकारा-नाक़िस उम्र	लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ़

قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ ع ٩ ١٥

वह लोग जो	पस नहीं	रिज़्क़	में	बाज़	पर	तुम में से बाज़	फ़ज़ीलत दी	और अल्लाह	70	क़ुदरत वाला

فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ

बराबर	उस में	पस वह	उन के हाथ	जो मालिक हुए	पर-को	अपना रिज़्क़	लौटा देने वाले	फ़ज़ीलत दिए गए

اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

बीवियां	तुम में से	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	71	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह	पस क्या नेमत से

وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ

से	और तुम्हें अ़ता की	और पोते	बेटे	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारे लिए	और बनाया (पैदा किया)

الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	इन्कार करते हैं	वह	और अल्लाह की नेमत	वह मानते हैं	तो क्या बातिल को	पाक चीज़

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद जिन्दा किया, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65)
और बेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुक़ामे) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध ख़ालिस उस से जो गोबर और खून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए खुशगवार। (66)
और खजूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज़्क़ (हासिल करते हो) बेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल रखते हैं। (67)
और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख़्तों में, और उस जगह जहां वह छतरियां बनाते है। (68)
फिर खा हर क़िस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रसतों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) उस के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, उस में लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69)
और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ़ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद बेइल्म हो जाए, बेशक अल्लाह जानने वाला, क़ुदरत वाला है। (70)
और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में, पस जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई वह अपना रिज़्क़ लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71)
और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अ़ता कीं, तो क्या वह बातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ

से	रिज़्क़	उन के लिए	इख़्तियार नहीं	जो	अल्लाह	सिवाए	से	और परस्तिश करते हैं

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا

पस न चस्पां करो	73	और न वह कुदरत रखते हैं	कुछ	और ज़मीन	आस्मानों

لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ

बयान किया	74	नहीं जानते	और तुम	जानता है	अल्लाह	बेशक	मिसालें	अल्लाह के लिए

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ

हम ने उसे रिज़्क़ दिया	और जो	किसी शै	पर	वह इख़्तियार नहीं रखता	मिल्क में आया हुआ	एक गुलाम	एक मिसाल	अल्लाह

مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ

क्या	और ज़ाहिर	पोशीदा	उस से	ख़र्च करता है	सो वह	अचछा	रिज़्क़	अपनी तरफ़ से

يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ

और बयान किया	75	नहीं जानते	उन में से अक्सर	बल्कि	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़	वह बराबर हैं

اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ

और वह	किसी शै पर	वह इख़्तियार नहीं रखता	गूंगा	उन में से एक	दो आदमी	एक मिसाल	अल्लाह

كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ

बराबर	क्या	कोई भलाई	वह न लाए	वह भेजे उस को	जहां कहीं	अपना आक़ा	पर	बोझ

هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ ع ١٠/١٦

76	सीधी	राह	पर	और वह	अ़द्ल के साथ	हुक्म देता है	और जो	वह - यह

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	काम (आना) क़ियामत	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें

كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

77	कुदरत वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	उस से भी क़रीब	वह	या	जैसे झपकना आँख

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ

कुछ भी	तुम न जानते थे	तुम्हारी माँएं	पेट (जमा)	से	तुम्हें निकाला	और अल्लाह

وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

78	तुम शुक्र अदा करो	ताकि तुम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और उस ने बनाया

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ

थामता उन्हें	नहीं	आस्मान की फ़िज़ा	में	हुक्म के पाबन्द	परिन्दा	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा

اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह	सिवाए

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख़्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क़ का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह कुदरत रखते हैं। (73)

पस तुम चस्पां न करो अल्लाह पर मिसालें, बेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (74)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए गुलाम की जो किसी शै पर इख़्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क़ दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर हैं? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं,बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। (75)

और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख़्तियार नहीं रखता किसी शै पर, और वह अपने आक़ा पर बोझ है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अद्ल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। (76)

और अल्लाह के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे हैं जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा क़रीब है, बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत वाला है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। (78)

क्या उन्हों ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, बेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां है। (79)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ

खालें	से	तुम्हारे लिए	और बनाया	सुकूनत (रहने) की जगह	तुम्हारे घरों	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह

الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ

अपना क़ियाम	और दिन	अपने कूच के दिन	तुम हल्का पाते हो उन्हें	घर (डेरे)	चौपाए

وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا

और बरतने की चीज़े	सामान	और उन के बाल	और उन की पशम	उन की ऊन	और से

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	और बनाया	साए	उस ने पैदा किया	उस से जो	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	80	एक वक़्त (मुद्दत)	तक

مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ

गर्मी	बचाते है तुम्हें	कुर्ते	तुम्हारे लिए	और बनाया	पनाह गाहें	पहाड़ों	से

وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

तुम पर	अपनी नेमत	वह मुकम्मिल करता है	उसी तरह	तुम्हारी लड़ाई	बचाते हैं तुम्हें	और कुर्ते

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ

पहुँचा देना	तुम पर	तो इस के सिवा नहीं	वह फिर जाएं	फिर अगर	81	फ़रमांबरदार बनो	ताकि तुम

الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ

और उन के अक्सर	मुन्किर हो जाते हैं उस के	फिर	अल्लाह	नेमत	वह पहचानते हैं	82	खोल कर (साफ़ साफ़)

ع ١١ ١٧ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ

न इजाज़त दी जाएगी	फिर	एक गवाह	उम्मत	हर	से	हम उठाएंगे	और जिस दिन	83	काफ़िर (जमा) नाशुक्रे

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	देखेंगे	और जब	84	उज़्र क़ुबूल किए जाएंगे	और न वह	उन्हों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	वह लोग

ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	मोहलत दी जाएगी	वह	और न	उन से	फिर न हल्का किया जाएगा	अ़ज़ाब	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ

यह हैं	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	अपने शरीक	ऊन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	वह लोग जो	देखेंगे	और जब

شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا

फिर वह डालेंगे	तेरे सिवा	हम पुकारते थे	वह जो कि	हमारे शरीक

اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ ۚ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ الثلثة

अल्लाह	तरफ़ (सामने)	और वह डालेंगे	86	अलबत्ता तुम झूटे	बेशक तुम	क़ौल	उन की तरफ़

يَوْمَئِذِ ِالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

87	इफ़तिरा करते (झूट घड़ते थे)	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	आजिज़ी	उस दिन

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया तुम्हारे घरों को रहने की जगह, और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों से डेरे बनाए, जिन्हें तुम हल्का फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने क़याम के दिन, और उन की ऊन, और पशम, और उन के बालों से (बनाए) सामान और बरतने की चीज़ें एक मुद्दते मुक़र्ररा तक। (80)

और अल्लाह ने जो पैदा किया उस से तुम्हारे लिए साये बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं पहाड़ो से पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए कुर्ते बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का बचाओ हैं और कुर्ते (जिरहें है) जो तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत मुकम्मिल करता है ताकि तुम फ़रमांबरदार बनो। (81)

फिर अगर वह फिर जाएं तो उस के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा ज़िम्मा) सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना है। (82)

वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं, फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और उन में से अक्सर नाशुक्रे हैं। (83)

और जिस दिन हर उम्मत से हम एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाज़त दी जाएगी काफ़िरों को और न उन से उज़्र क़ुबूल किए जाएंगे। (84)

और (याद करो) जब ज़ालिम अ़ज़ाब देखेंगे फिर न उन से (अ़ज़ाब) हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85)

और (याद करो) जब मुश्रिक अपने शरीकों को देखेंगे तो वह कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे, फिर वह (उन के शरीक) उन की तरफ़ डालेंगे क़ौल (जवाब देगें कि) बेशक तुम झूटे हो। (86)

और वह उस दिन अल्लाह के सामने आजिज़ी (का पैग़ाम) डालेंगे और उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे) जो वह झूट घड़ते थे। (87)

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا

अ़ज़ाब	हम बढ़ादेंगे	अल्लाह की राह	से	और रोका	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो

فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

में	हम उठाएंगे	और जिस दिन	88	वह फ़साद करते थे	क्योंकि	अ़ज़ाब	पर

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا

गवाह	आप (स) को	और हम लाएंगे	उन ही में से	उन पर	एक गवाह	हर उम्मत

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

हर शै का	(मुफ़स्सिल) बयान	किताब (क़ुरआन)	आप पर	और हम ने नाज़िल की	इन सब पर

وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ

ع ١٢ ٦ ١٨

हुक्म देता है	बेशक अल्लाह	89	मुसलमानों के लिए	और ख़ुशख़बरी	और रहमत	और हिदायत

بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ

से	और मना करता है	रिश्ते दार	और देना	और एहसान	अ़दल का

الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90	ध्यान करो	ताकि तुम	तुम्हें नसीहत करता है	और सरकशी	और नाशाइस्ता	बेहयाई

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ

क़स्में	और न तोड़ो	तुम अ़हद करो	जब	अल्लाह का अ़हद	और पूरा करो

بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	ज़ामिन	अपने ऊपर	अल्लाह	और तहक़ीक़ तुम ने बनाया	उन को पुख़्ता करना	बाद

يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا

अपना सूत	उस ने तोड़ा	उस औ़रत की तरह	और तुम न हो जाओ	91	जो तुम करते हो	जानता है

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ

कि	अपने दरमियान	दख़ल का बहाना	अपनी क़समें	तुम बनाते हो	तुकड़े तुकड़े	कुव्वत (मज़बूती)	बाद

تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ

और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा	उस से	अल्लाह	आज़माता है तुम्हें	उस के सिवा नहीं	दूसरा गिरोह	से	बड़ा हुआ (ग़ालिब)	वह	एक गिरोह	हो जाए

لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह चाहता	और अगर	92	इख़्तिलाफ़ करते थे तुम	उस में	तुम थे	जो	रोज़े क़ियामत	तुम पर

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

जिसे वह चाहता है	गुमराह करता है	और लेकिन	एक उम्मत	तो अलबत्ता बना देता तुम्हें

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	तुम करते थे	उस की बाबत	और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ादेंगे, क्यों कि वह फ़साद करते थे। (88)

और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर क़ुरआन नाज़िल किया, हर शै का मुफ़स्सिल बयान, और हिदायत ओ रहमत, और ख़ुशख़बरी मुसलमानों के लिए। (89)

बेशक अल्लाह अ़दल ओ एहसान का हुक्म देता है और रिशते दारों को (उन के हुक़ूक़) देने का और मना करता है बेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। (90)

और जब तुम (पुख़्ता) अ़हद करलो तो अल्लाह का अ़हद पूरा करो, और क़स्में पुख़्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहक़ीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, बेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (91)

और तुम उस औ़रत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी क़समों को अपने दरमियान दख़ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आज़माता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (92)

और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की बाबत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। (93)

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ

कोई क़दम	कि फिसले	अपने दरमियान	दख़ल का बहाना	अपनी क़स्में	और तुम न बनाओ

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह का रास्ता	से	रोका तुम ने	इस लिए कि	बुराई (वबाल)	और तुम चखो	अपने जम जाने के बाद

وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ

थोड़ा	मोल	अल्लाह के अ़हद के बदले	और तुम न लो	94	बड़ा	अ़ज़ाब	और तुम्हारे लिए

اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ

जो तुम्हारे पास	95	तुम जानो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	वही	अल्लाह के हां	बेशक जो

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا

उन्हों ने सब्र किया	वह लोग जो	और हम ज़रूर देंगे	बाक़ी रहने वाला	अल्लाह के पास	और जो	ख़तम हो जोता है

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

कोई नेक	अ़मल किया	जो - जिस	96	वह करते थे	जो	उस से बेहतर	उन का अजर

مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

पाकीज़ा	ज़िन्दगी	तो हम उसे ज़रूर जिंदगी देंगे	मोमिन	जबकि वह	औ़रत	या	मर्द हो

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا

पस जब	97	वह करते थे	जो	उस से बहुत बेहतर	उन का अजर	और हम ज़रूर उन्हें देंगे

قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

98	मर्दूद	शैतान	से	अल्लाह की	तो पनाह लो	क़ुरआन	तुम पढ़ो

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

और अपने रब पर	ईमान लाए	वह लोग जो	पर	कोई ज़ोर	उस के लिए	नहीं	बेशक वह

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ

और वह लोग जो	उस को दोस्त बनाते हैं	वह लोग जो	पर	उस का ज़ोर	इस के सिवा नहीं	99	वह भरोसा करते हैं

١٣ ع ١١ ١٩ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ

और अल्लाह	दूसरा हुक्म	जगह	कोई हुक्म	हम बदलते हैं	और जब	100	शरीक ठहराते हैं	उस (अल्लाह) के साथ	वह

اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

उन में अक्सर	बल्कि	तुम घड़ लेते हो	तू	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	वह नाज़िल करता है	उस को जो	खूब जानता है

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	तुम्हारा रब	से	रूहुल क़ुदुस (जिब्राईल अ)	इसे उतारा है	आप (स) कहदें	101	इल्म नहीं रखते

لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	मुसलमानों के लिए	और खुशख़बरी	और हिदायत	ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जो	ताकि साबित क़दम करे

और अपनी क़समों को न बनाओ अपने दरमियान दख़ल का बहाना कि कोई क़दम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में वबाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (94)

और तुम अल्लाह के अ़हद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) बेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। (95)

जो तुम्हारे पास है वह ख़तम होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सब्र किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। (96)

जिस ने कोई नेक अ़मल किया वह मर्द हो या औ़रत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आख़िरत) में उन का अगर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। (97)

पस जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। (98)

बेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (99)

इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। (100)

और जब हम कोई हुक्म किसी दूसरे हुक्म की जगह बदलते हैं, और अल्लाह खूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (ख़ुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। (101)

आप (स) कह दें कि उसे जिब्राइल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक़ के साथ ताकि मोमिनों को साबित क़दम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत ओ खुशख़बरी है। (102)

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىْ

वह जो कि	ज़बान	एक आदमी	उस को सिखाता है	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	कि वह	और हम खूब जानते हैं

يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

103	वाज़ेह	अ़रबी	ज़बान	और यह	अ़जमी	उस की तरफ़	कजराही (निस्बत) करते हैं

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह	हिदायत नहीं देता	अल्लाह की आयतों पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾ اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

जो ईमान नहीं लाते	वह लोग	झूट	बुहतान बान्धता है	इस के सिवा नहीं	104	दर्दनाक अ़ज़ाब

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	अल्लाह का	मुन्किर हुआ	जो	105	झूटे	वह	और यही लोग	अल्लाह की आयतों पर

اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ

और लेकिन (बल्कि)	ईमान पर	मुत्मइन	जब कि उस का दिल	मजबूर किया गया	जो	सिवाए	उस के ईमान

مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह का	ग़ज़ब	तो उन पर	सीना	कुफ़्र के लिए	कुशादा करे	जो

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	उन्हों ने पसन्द किया	इस लिए कि वह	यह	106	बड़ा अ़ज़ाब

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107	काफ़िर (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	अल्लाह	और यह कि	आख़िरत	पर

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ

और उन की आँख	और उन के कान	उन के दिल	पर	अल्लाह ने मुहर लगादी	वह जो कि	यही लोग

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ

वह	आख़िरत में	कि वह	कुछ शक नहीं	108	ग़ाफ़िल (जमा)	वह	और यही लोग

الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	उन्हों ने हिज्रत की	उन लोगों के लिए	तुम्हारा रब	बेशक	फिर	109	ख़सारा उठाने वाले

مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا

उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	उन्हों ने सब्र किया	उन्हों ने जिहाद किया	फिर	सताए गए	कि

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ ع ١٤ ٢٠

से	झगड़ा करता	शख़्स	हर	आएगा	जिस दिन	110	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़्शने वाला

نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

111	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने किया	जो	शख़्स	हर	और पूरा दिया जाएगा	अपनी तरफ़

और हम खूब जानते हैं कि वह कहते हैं कि इस के सिवा नहीं कि उसे एक आदमी सिखाता है, जिस की तरफ़ वह निसबत करते हैं उस की ज़बान अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) है, और यह वाज़ेह अ़रबी ज़बान है। (103)
बेशक जो लोग ईमान नहीं लाते अल्लाह की आयतों पर, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (104)
इस के सिवा नहीं कि वही लोग झूट बुहतान बान्धते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग झूटे हैं। (105)
जो अल्लाह का मुन्किर हुआ उस (अल्लाह) पर ईमान के बाद, सिवाए उस के जो मजबूर किया गया हो, जब कि उस का दिल ईमान पर मुत्मइन हो, बल्कि जो कुफ़्र के लिए सीना कुशादा करे (मन मरज़ी से कुफ़्र करे) तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (106)
यह इस लिए है कि उन्हों ने दुनिया की जिन्दगी को आख़िरत पर पसन्द किया, और यह कि अल्लाह हिदायत नहीं देता काफ़िर लोगों को। (107)
यही लोग हैं अल्लाह ने मुहर लगादी है जिन के दिलों पर, और उन के कानों पर, और उन की आँखों पर, और यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (108)
कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ख़सरा (नुक़्सान) उठाने वाले हैं। (109)
फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने हिज्रत की, उस के बाद कि वह सताए गए और फिर उन्हों ने जिहाद किया, और सब्र किया, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (110)
जिस दिन हर शख़्स अपनी (ही) तरफ़ से झगड़ा करता आएगा, और हर शख़्स को पूरा दिया जाएगा जो उस ने किया और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (111)

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً

मुत्मइन	बेख़ौफ़	वह थी	एक बस्ती	एक मिसाल	और बयान की अल्लाह ने

يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ

नेमतों से	फिर उस ने नाशुक्री की	हर जगह	से	बाफ़राग़त	उस का रिज़्क़	उस के पास आता था

اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا

उस के बदले जो	और ख़ौफ़	भूक	लिबास	अल्लाह	तो चखाया उस को	अल्लाह

كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ

सो उन्हों ने उसे झुटलाया	उन में से	एक रसूल	और बेशक उन के पास आया	112	वह करते थे

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوْا مِمَّا

उस से जो	पस तुम खाओ	113	ज़ालिम (जमा)	और वह	अ़ज़ाब	तो उन्हें आ पकड़ा

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह की नेमत	और शुक्र करो	पाक	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ

मुर्दार	तुम पर	हराम किया	इस के सिवा नहीं	114	तुम इबादत करते हो	सिर्फ़ उस की	तुम हो

وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ

पस जो	उस पर	अल्लाह के अ़लावा	पुकारा जाए	और जो	और ख़िनज़ीर का गोश्त	और ख़ून

اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और न हद से बढ़ने वाला	न सरकशी करने वाला	लाचार हुआ

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا

यह	झूट	तुम्हारी ज़बानें	बयान करती हैं	वह जो	और तुम न कहो

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ اِنَّ

बेशक	झूट	अल्लाह	पर	कि बुहतान बान्धो	हराम	और यह	हलाल

الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾

116	फ़लाह न पाएंगे	झूट	अल्लाह	पर	बुहतान बान्धते हैं	वह लोग जो

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى

और पर	117	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	थोड़ा	फ़ाइदा

الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ

इस से क़ब्ल	तुम पर (से)	जो हम ने बयान किया	हम ने हराम किया	जो लोग यहूदी हुए (यहूदी)

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

118	ज़ुल्म करते	अपने ऊपर	वह थे	बल्कि	और नहीं हम ने ज़ुल्म किया उन पर

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुत्मइन बेख़ौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़्क़ बाफ़राग़त आ जाता था, फिर उस ने नाशुक्री की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और ख़ौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और ख़ौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112)

और बेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्हों ने उसे झुटलाया, तो अ़ज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113)

पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114)

उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है मुर्दार और ख़ून, और ख़िनज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अ़लावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (115)

और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, बेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) न पाएंगे। (116)

(उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अ़ज़ाब दर्दनाक है। (117)

और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से क़ब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (118)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا

उन्हों ने तौबा की	फिर	नादानी से	बुरे	अमल किए	उन लोगों के लिए जो	तुम्हारा रब	बेशक	फिर

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ ع ع ١٥ ٢١

119	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	और उन्हों ने इस्लाह की	उस के बाद

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ

से	और न थे	यक रुख़	अल्लाह के	फ़रमांबरदार	एक जमाअत (इमाम)	थे	इब्राहीम (अ)	बेशक

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

121	सीधी राह	तरफ़	और उस की रहनुमाई की	उस ने उसे चुन लिया	उस की नेमतों के लिए	शुक्र गुज़ार	120	मुश्रिक (जमा)

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ

अलबत्ता - से	आख़िरत में	और बेशक वह	भलाई	दुनिया में	और उस को दी हम ने

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ

यक रुख़	इब्राहीम (अ)	दीन	पैरवी करो तुम	कि	तुम्हारी तरफ़	वहि भेजी हम ने	फिर	122	नेकोकार (जमा)

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	हफ़्ते का दिन	मुक़र्रर किया गया	उस के सिवा नहीं	123	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे वह

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

उस में जो	रोज़े क़ियामत	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	और बेशक	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ

हिक्मत (दानाई) से	अपना रब	रास्ता	तरफ़	तुम बुलाओ	124	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे

وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ

बेशक	सब से बेहतर	वह	ऐसे जो	और बहस करो उन से	अच्छी	और नसीहत

رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125	राह पाने वालों को	ख़ूब जानने वाला	और वह	उस का रास्ता	से	गुमराह हुआ	उस को जो	ख़ूब जानने वाला	वह	तुम्हारा रब

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ

और अगर	उस से	जो तुम्हें तकलीफ़ दी गई	ऐसी ही	तो उन्हें तकलीफ़ दो	तुम तकलीफ़ दो	और अगर

صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ

अल्लाह की मदद से	मगर	तुम्हारा सब्र	और नहीं	और सब्र करो	126	सब्र करने वालों के लिए	बेहतर	तो वह	तुम सब्र करो

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127	वह फ़रेब करते हैं	उस से जो	तंगी	में	और न हो	उन पर	और ग़म न खाओ

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾ ع ع ١٦ ٢٢

128	नेकोकार (जमा)	वह	और वह लोग जो	उन्हों ने परहेज़गारी की	वह लोग जो	साथ	बेशक अल्लाह

फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने नादानी से बुरे अ़मल किए, फिर उस के बाद उन्हों ने तौबा की और इस्लाह कर ली, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (119)

बेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फ़रमांबरदार, यक रुख़ (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्रिकों में से न थे, (120)

उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ़। (121)

और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से हैं, (122)

फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रुख़) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (123)

इस के सिवा नहीं कि हफ़्ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुक़र्रर किया गया जिन्हों ने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता क़ियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (124)

तुम अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे बहस करो जो सब से बेहतर हो, बेशक तुम्हारा रब उस को ख़ूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को ख़ूब जानने वाला है। (125)

और अगर तुम तकलीफ़ दो तो ऐसी ही तकलीफ़ दो, जैसी तुम्हें तकलीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)

और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और ग़म न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)

बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जिन्हों ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)